Click www.researchjournal.co.in/online/subdetail.html to purchase.

ARTICLE

ADVANCE RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE
| December, 2011 | Volume 2 | Issue 2 | 286-288

लोक साहित्य में रसाभिव्यक्ति

■रेखा शर्मा एवं जे0 के0 जैन

KEW WORDS : लोक साहित्य, उल्लासावस्था, ओज अवस्था, क्षोभावस्था

How to cite this Article: Sharma, Rekha and Jain, J.K. (2011).Lok Sahitya Mae, Rasabhivayakti, *Adv. Res. J. Soc. Sci.,* **2** (2) : 286-288.

Article chronicle : Received : *03.11.2011;* **Accepted** : *29.11.2011*

मानव जीवन का अन्तिम तथ्य है– 'आनन्द'। हमारे विभिन्न क्रियाकलाप आनन्द की ही प्राप्ति के लिए संयोजित होते हैं। व्यावहारिक रूप से यह आनन्द ही रस है। इसकी साहित्यिक मीमांसा यह है कि वाणी के माध्यम से अभिव्यक्त भाव सौन्दर्य का आस्वादन रस है। रस की महिमा व्यापक है।

प्राचीन भारतीय आचार्यो के अनुसार रस ही काव्य की आत्मा है। इस सिद्धान्त के प्रथम आचार्य भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभावों के संयोग से रस की उत्पत्ति बतायी है। आचार्य मम्मट ने भी विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी द्वारा अभिव्यक्त स्थायी भावों को रस माना है।

साहित्य दर्पणकार की रस परिभाषा भी भरतमुनि के रस–सूत्र की सुन्दर निवृत्ति है। उन्होंने भी विभावादी योजना और सहृदय की रत्यादि वासना की रसमयता में व्यर्डै.य व्य जक भाव सम्बन्ध की अनिवार्यता स्वीकार की है। रस के स्वरूप का विवेचन करते हुए उन्होने उसे अखण्ड, स्व प्रकाशमय, चिन्मय, वेद्यान्तरस्पर्श शून्य और ब्रह्मानन्द सहोदर कहा है।

रस की प्रतिष्ठा लोक–साहित्य में सबसे अध्कि मिलती है परलोक साहित्य में इस प्रतिष्ठा की स्थिति मनीषी साहित्य से भिन्न प्रकार की होती है। यहाँ पर रस उतना वस्तु सामग्री में शास्त्रीय उपादानों से परिपक्व नहीं होता है, जितना अभिप्रेत रहता है। अद्भुत, वीर, वीभत्स, वात्सल्य और कहीं–कहीं हल्के भय का संचार मिल जाता है और कहीं–कहीं हास्य रस का। किन्तु लोक कवि के यहाँ इनका इतना सूक्ष्म महत्व नहीं। उसकी अभिव्यक्ति में ऐसे सूक्ष्म भाव जहाँ–वहाँ क्षणिक संचार कर जाते हैं लेकिन स्थायी नहीं होते। इन भावों से ऊपर और स्थल है हृदय और मन की विशेष अवस्था। यह विशेष अवस्था वृत्ति है, यह स्थूलता तीन प्रकार की हैं–

1. उल्लासावस्था 2. ओज अवस्था 3. क्षोभावस्था।

उल्लास में प्रेम रति, ऐश्वर्य वैभव से उत्पन्न मनोस्थिति आदि का समावेश होता है। ओज में वीरता, उत्साह, अद्भुत, रौद्र आदि भावों का संचार होता है। क्षोभ में भय, क्रीडा, करूणा, निराशा आदि का संचार होता है।

यही कारण है कि छद्म सौन्दर्य और लालित्य का खोल ओढ़कर बनावटी जिन्दगी को प्रस्तुत करने वाला श्रृंगार भारतीय जिन की भौतिक विवशताओ से उपजी करूण रस की धरा अथवा वीर रस के नाम पर क्रान्ति का विद्रूप यहाँ दृष्टि गोचर नही होता। लोक साहित्य में प्रयुक्त रस इस प्रकार हैं–

श्रृंगार रस की अभिव्यक्तिः

'रति' स्थायी भाव से अभिव्यि जत होने वाला रस श्रृंगार रस है। अग्नि पुराण में अन्य सभी रसों का श्रृंगार से ही प्रादुर्भाव माना है।

श्रृंगार रस के दो भेद है–

Author for correspondence:
रेखा शर्मा, शिक्षा विभाग, एस0डी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर।

Address for the coopted Authors:
जे0के0 जैन, शिक्षा विभाग, एस0डी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर।